

क्या हो बालू-रेत का विकल्प?

एन.एम. शरीफ

बालू-रेत की अंधाधुंध खुदाई से नर्मदा जैसी कई नदियों का प्राकृतिक स्वरूप संकट में है। इससे न केवल इन नदियों में रहने वाले जीव-जंतुओं के अस्तित्व पर खतरे की तलवार लटक रही है, बल्कि अन्य गंभीर पर्यावरणीय प्रभावों की भी आशंका जताई जा रही है। सवाल यह है कि आखिर इसका विकल्प क्या है?

हम सभी जानते हैं कि कोई भी निर्माण कार्य (बालू) रेत या रेती के बगैर नहीं हो सकता। कम से कम आज की तारीख में तो इसका कोई विकल्प नहीं है। अर्थव्यवस्था में उछाल की वजह से निर्माण क्षेत्र में भी तेज़ी आई है। इससे रेत की मांग भी प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इसे पूरा करने के लिए नदियों व तालाबों की तलहटी का दोहन भी कहीं अधिक तेज़ी से किया जाने लगा है। ज़ाहिर है, इससे रेत के ये स्रोत भारी दबाव में हैं। रेत की अंधाधुंध खुदाई से न केवल यह महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन बड़ी तेज़ी से खत्म होता जा रहा है, बल्कि इससे पर्यावरण सम्बंधी नई समस्याएं भी खड़ी हो रही हैं।



रेत की अवैज्ञानिक व मनमाने ढंग से खुदाई के पर्यावरणीय दुष्प्रभावों का वर्णन तो विस्तार से विज्ञान की किताबों में मिल जाएगा, लेकिन अब इन प्रभावों को खुदाई इलाकों के आस-पास रहने वाले लोग भी महसूस करने लगे हैं। दुर्भाग्य से हमारा प्रशासन और नागरिक समाज दोनों ही इस तरह के मुद्दों के प्रति उदासीन हैं। वे केवल अपनी ज़रूरतों की पूर्ति में ही मग्न हैं और इस बात से बेपरवाह हैं कि धरती को अगली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने का उनका भी कुछ दायित्व है।

नदियों के तल से रेत की खुदाई से जहां एक तरफ

भूजल स्तर में कमी आ रही है, वहीं उसमें खारापन भी बढ़ता जा रहा है। इसके अलावा अन्य कई दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं, जैसे कृषि भूमि का कम होना, खेतिहर मज़दूरों के लिए रोज़गार के अवसरों में कमी, इकोसिस्टम को नुकसान इत्यादि।

देखा जाए तो नदी तलों से रेती की खुदाई से नदियों की पूरी प्रणाली ही चौपट होती जा रही है। रेत एक प्रकार से स्पंज का काम करती है, जो पानी को अपने में सोखकर भूजल स्तर को बढ़ाने में मददगार साबित होती है। रेत की इस परत के हटते ही नदी की द्रव गतिकी (हाइड्रोडायनामिक्स) अस्त-व्यस्त हो जाती है, जिससे पानी के प्रवाह पर असर पड़ता है। यही नहीं, इससे सूर्य के प्रकाश को मिट्टी में गहराई तक जाने का रास्ता मिल जाता है जिससे भूजल के

वाष्पीकरण की दर भी बढ़ जाती है। रेत एकत्र करने के लिए ट्रकों को नदियों के बीच तक ले जाया जाता है। इससे भी नदी का तल थोड़ा-थोड़ा नष्ट होता जाता है। नदियों के तल को नुकसान पहुंचाने से उनमें पाए जाने वाले जीव-जंतुओं के प्राकृतवास भी धीरे-धीरे खत्म होते जा रहे हैं।

रेत व बजरी की अधिक खुदाई से नदी की गहराई बढ़ जाती है जिससे प्रवाह में इस तरह का असंतुलन पैदा हो जाता है कि नदी के किनारों में कटाव होने लगता है। इससे न केवल नदी के मुहाने विस्तृत हो जाते हैं, बल्कि उनमें गिरने वाले नालों का मुख भी चौड़ा हो जाता है। इसका एक सीधा-सा नतीजा तो यह निकलता है कि नदी में लवणीयता बढ़ जाती है, विशेषकर भाटों के दौरान। एक बार जैसे ही यह लवणीयता नदी की मुख्यधारा में पहुंचती है, उसके इकोसिस्टम को खत्म कर देती है। नदी के मुहानों के चौड़े होने से पूरे क्षेत्र में बाढ़ व तूफानी लहरों का खतरा भी बढ़ जाता है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि निर्माण क्षेत्र को रेती चाहिए क्योंकि इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं है। लेकिन सवाल यह है कि आखिर रेत के लिए नदियों का दोहन कब तक होता रहेगा? इसलिए अब नदियों की रेत के विकल्प की खोज करने का समय आ गया है।

भारतीय भू-विज्ञान सर्वेक्षण की समुद्री शाखा ने केरल के तट से थोड़ी दूरी पर निर्माण में काम आने वाली रेत के भंडार का पता लगाया है। यह भंडार करोड़ों टन का है।

अगर इस भंडार का पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना व्यावसायिक दोहन किया जाए तो यह नदियों की रेत के मुकाबले एक अच्छा विकल्प हो सकता है। चूंकि इस रेत के लिए खुदाई समुद्र में नहीं की जाएगी। इसलिए समुद्र की द्रव गतिकी पर भी इसका कोई असर नहीं पड़ेगा। वैसे भी रेत का यह भंडार समुद्र तट से 30 किलोमीटर दूर स्थित है। इस भंडार का निर्माण तब हुआ था जब किसी ज़माने में समुद्र रौद्र रूप धारण कर तटों को पार कर गया था। उसके वापस लौटने के बाद साथ आई रेत यहीं रह गई। यह रेत बिल्कुल खुली बिखरी पड़ी है जिसकी खुदाई आसान है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस भंडार में हर ग्रेड की रेत है जिसका इस्तेमाल निर्माण से लेकर कांच उद्योग तक में किया जा सकता है।

यह तय है कि तटीय रेत की खुदाई के भौतिकीय वातावरण पर प्रभाव न्यूनतम रहेंगे, लेकिन जैविक पर्यावरण पर क्या असर पड़ेगा, इसका व्यापक अध्ययन करना होगा। चूंकि इस प्रकार की खुदाई इससे पहले कभी नहीं की गई है, इसलिए इस बात की व्यवस्था की जानी चाहिए कि खुदाई के दौरान इसकी वैज्ञानिक ढंग से निगरानी हो और सभी ज़रूरी सूचनाएं एकत्र की जाएं। प्रत्येक क्षेत्र के लिए विशेष प्रभाव आकलन किया जाना भी आवश्यक है। धरती के मूल स्वरूप के साथ किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ के नतीजों को जानना हमारे टिकाऊ विकास के लिए बेहद ज़रूरी है। (स्रोत फीचर्स)

स्रोत सजिल्द

स्रोत के पिछले अंक

एक वर्ष सजिल्द रूपए 200.00 | डाक खर्च रूपए 25.00 अतिरिक्त ।

राशि एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से भेजें ।

एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, वी.डी.ए.. कॉलोनी, शिवाजी नगर,

भोपाल (म.प्र.) 462 016